राम राज्य की प्रासांगिकता -कल, आज और कल

श्री अजेय कुमार
स्वतंत्र चिन्तक, नयी दिल्ली

राम राज्य की प्रासांगिकता- कल, आज और कल- सदियों से भारत ही नहीं समूचे विश्व में श्री राम और राम राज्य आदर्श व्यक्ति व आदर्श राज्य के रूप में कल भी सत्य था, आज भी सत्य है और कल भी सत्य रहेगा | श्री राम ही वह नाम है जिसकी दिव्य गूंज भारत के कण कण में सुनाई देती है। भारत में अभिवादन का प्रारंभ ही राम नाम से होता है, नवजात शिशु की जीभ पर भी ॐ या राम शहद से लिखा जाता है, राम नाम गुण धर्म का प्रतीक है, यदि कहा जाए कि इसका तो राम ही निकल गया है तो ये माना जाता है कि या तो वह मर गया है या अपने मार्ग से विमुख हो गया है | अचूक औषधी भी राम बाण है, बड़ी से बड़ी समस्या में राम ही सहारा हैं | मृत्यु के समय भी 'राम नाम सत्य' कहा जाता है।

श्री राम विपरीत परिस्थितियों में समाज का सम्बल बने। भारत के बाहर भेजे गए गिरमिटिया मजदूरों को भारत व हिन्दुत्व के साथ तथा संस्कारित बनाए रखने में श्री राम ही आधार बने। गांधी तो राम नाम को अपने लिए औषध ही मानते हैं। वंदनीया लक्ष्मी बाई केलकर (संस्थापिका राष्ट्र सेविका समिति) श्री राम नाम को ऐसी माधुरी कहती हैं, जो सबसे न्यारी है, इसके आकर्षण में बड़े अपना बड़प्पन, बाल अपना बचपन व तरुण अपना पौरुषमय मर्यादित यौवन ढूंढते हैं। अर्थात श्री राम जीवन के प्रत्येक आयु वर्ग के लिए आदर्श हैं, ग्रहणीय हैं। श्री राम चाहें गिरीवासी हो या वनवासी, शहरी हो या ग्रामवासी, स्त्री हो या पुरुष सभी को अपने नजदीक तथा श्रेष्ठ व्यवहार के प्रतीक के रूप में आत्मीय व प्रेरक दिखते हैं |

श्री राम सभी सम्बंधों में अपनी छाप स्थापित करते प्रतीत होते हैं, चाहें वे पिता-पुत्र के हों या माता-पुत्र के, भाई-भाई के हों या मित्र- मित्र के, पति-पत्नी के हों या स्वामी-सेवक के यहाँ तक

कि शत्रु के प्रति भी श्री राम आदर्श हैं। राम रावण की मृत्यु पर विभीषण को कहते हैं कि मृत्युपरांत बैर समाप्त हो जाते हैं अत: तुम अपने भाई का संस्कार करो |

पति-पत्नी का आदर्श आज भी राम सीता ही हैं तथा भाई-भाई का आदर्श राम लक्ष्मण ही हैं। श्री राम जीवन के हर क्षेत्र को चाहे वह शैक्षणिक हो या सामाजिक, पारिवारिक हो या राजनैतिक, धार्मिक हो या आध्यात्मिक हो या सांस्कृतिक सभी को प्रभावित करते दिखते हैं |

बाल्मिकी के राम युग पुरुष महामानव हैं, वे संस्कृति के द्योतक शक्ति व प्रज्ञा सम्पन्न व संयमी है। तुलसी के राम परम ब्रहम हैं, वह भारत की संस्कृति के आदर्श पुञ्ज हैं, वे इतिहास नहीं नित्य निरन्तर हैं, श्री राम प्रजानुरंजन व लोक हितकारी हैं। राम को सभी ने अपनी-अपनी दृष्टि मे साकार किया और उसी रूप में उनका वर्णन भी किया। राम निर्गुण-निराकार व सगुण-साकार दोनों ही स्वरूपों में साक्षात है | **जाकी रही भावना जैसी । प्रभु सूरत देखी तिन तैसी ॥**

अयोध्या की विशेषता है कि वहाँ युद्ध नहीं होता था क्योंकि वह शक्तिशाली समृद्ध व सद्गुणी राज्य था। इसकी रचना स्वयं स्वयंभू मनु ने की थी, यहीं से सारी पृथ्वी का शासन चलता था, इसके बाद उन्होंने इसे अपने पुत्र इक्ष्वाकु को सौपीं, कालान्तर में उन्हीं के वंशजों ने अयोध्या के माध्यम से धरती का शासन किया। गंगा धरती पर लाने वाले इसी वंश के राजा भागीरथ हुए, जिनकी तपस्या व तकनीक से गंगा को गंगा सागर तक पहुंचाया जा सका। इससे समस्त पृथ्वी के मानवों का कल्याण संभव हो सका, आज भी गंगा वैतरणी कही जाती है, गंगा निर्मलता, पवित्रता, उदात्तता व निरन्तरता की प्रतीक है। इसी कुल में राजा दिलीप, राजा रघु व राजा अज हुए। ये सभी धर्मज्ञ शासक हुए । इन्हें अपने से अधिक प्रजा प्रिय थी। रघुवंश में कालीदास जी लिखते हैं कि राजा रघु की शव यात्रा में प्रजा को लग रहा था कि उनका पिता ही छिन गया है। सभी एक से बढ़ कर एक धर्मशील, नीतिनिपुण, पराक्रमी वीर, साहसी, प्रजा वत्सल राजा हुए । राम राज्य की नींब में ये तेजस्वी परम्परा है । यदि देवताओं को भी आवश्यकता पड़ी तो वे इसी कुल के राजाओं के पास गए, मुचकुंद और राजा दशरथ इसके उदाहरण है | अयोध्या की भित्तिकाएँ स्वर्ण व रत्नो से मंडित हैं, नगर सेठ कुबेर से कम नहीं है, सड़के चौड़ी व सुगंधित जल से सिचिंत हैं। सरयू का पवित्र जल शीतल, मधुर व निर्मल है। अयोध्या नगरी में वन, उपवन, बाबडियाँ व तालाब पर्याप्त मात्रा में हैं। बाल्मिकी रामायण में अयोध्या की धवलता को कैलाश के समकक्ष कहा गया है |

सभी अयोध्या वासी शुद्ध कर्म करते हैं, शुद्ध अन्न खाते हैं व उनकी दृष्टि भी शुद्ध है। किसी व्यवस्था के पालन में स्वअनुशासन का सर्वाधिक महत्व होता है | रामराज्य को शासन व्यवस्था का परिवर्तन कहना उचित ना होगा, रामराज्य परम्परा से प्राप्त एक जीवन रचना है, राज्य व्यवस्था उसका एक भाग है | मनु महाराज ऐसी शासन व्यवस्था चहाते थे जिसमें राजदंड ना चले धर्म दण्ड चले और वह भी समाज द्वारा स्वयं के लिए नियोजित । रामराज्य में यही महत्व की बात है जिसे द्वापर में पितामह भीष्म युधिष्ठिर को कहते हैं-

“धर्मण्यैव प्रजा सर्वे रक्षन्ति स्म परस्परम” |

राजा के गुण - दशरथ श्री राम के युवराज होने योग्य गुण बताते हैं - राम दिव्य गुणी, सत्य परायण, सत्य प्रतिज्ञ, सत्य के प्रचारक तथा ब्रहमचर्य का पालक है। गोस्वामी तुलसी दास जी लिखते हैं -

जासुराज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी ॥

श्री राम भरत को कहते हैं प्रजा का सुख ही राजा का प्रथम कर्तव्य है, राजा निजी सुखों को त्याग कर जन सेवा में रत रहे, राजा त्याग, सेवा व तपस्वी जीवन सदा चरण से जनहित में जिये |

श्रीराम वसिष्ठ जी के शिष्य को राज्याभिषेक के बाद मिलने पर कहते हैं-

स्नेहं दयां च सौरव्यं च यदि वा जानकीमपि।

आराधनाथ लोकानां मुञ्चतो नास्ति में व्यथा ॥

अर्थात स्नेह, दया, सौरव्यं व स्वयं जानकी को भी लोक आराधना के लिए यदि छोड़ना पड़ा तो छोड़ दूंगा | इतना ही नहीं राम कहते हैं अपने वचन के पालन के लिए मैं सीता, लक्ष्मण का त्याग और स्वयं को भी समाप्त कर सकता हूं।

श्रीराम के जीवन में वह सभी दिखता है। दशरथ कैकेयी को कहते हैं राम सत्य भाषी व एक वचनी है।

सीता के त्याग पर श्री राम कहते हैं - राजा जैसा करता है प्रजा भी वैसा ही करती है - 'यथा राजा तथा प्रजा', राजा को प्रजा का सभी प्रकार से ध्यान रखना ही होता है। राजा राष्ट्र का प्रतीक है। वे कहते हैं, राजा पर लगा कलंक का एक धूलि कण, प्रजा के समक्ष काला पर्वत बन

जाएगा। राजा को सभी कुछ सहकर भी प्रजा का पालन करना ही चाहिए। यद्यपि सीता शुद्ध व यशस्विनी है, तो भी लोकरंजन हेतु उसका त्याग अनिवार्य है। - **अन्तरात्मा च मे वेत्ति सीता शुद्ध यशस्वनीम् (7-45.10) बा. रा**

राम राज्य के तत्व - तप - राम राज्य के मूल में प्रथम अनिवार्य और महत्व का तत्व है वह तप क्योंकि कहा गया है तप से ब्रह्मा सृष्टि की रचना, विष्णु पालन व शिव संहार करते हैं। राम राज्य में परम्परा से तप का महत्व दिखाई देता है।

राम-भरत - लक्ष्मण - शत्रुघ्न चारों भाई अपने-अपने अनुसार तप करते हैं। राम व लक्ष्मण वन में, राम-सीता सहित वन में गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी तप कर रहे हैं, समाज को अनुशासित व, संगठित कर रहे हैं। राम-लक्ष्मण- भरत शत्रुघ्न- गीता के अनुसार शरीर, मन व वाणी (अध्याय 17 श्लोक 14, 15, 16) का तप कर रहे हैं |

निषाद कैकेयी की बुराई करते हैं तब लक्ष्मण कहते हैं इसमें उनका कोई दोष नहीं, दैव ने ही ऐसा संजोग बनाया है। लक्ष्मण राम व सीता की सभी प्रकार से आज्ञा का पालन करते हैं। एक सेवक की भांति आचरण करते हैं एक क्षण भी कोताही नहीं बरतते |

भरत नगर में होते हुए सन्यासी का जीवन व्यतीत करते हैं, नंदी ग्राम में श्री राम के आसन से नीचे भूमि पर अपनी व्यवस्था करते हैं | वन के फलों का ही सेवन करते हुए 14 वर्ष पादुका को श्रीराम का प्रतिनिधि मानकर योग्य शासन व्यवस्था चलाते हैं | जो अयोध्या कांड में चित्रकुट में श्री राम और भरत की राज्य सम्बन्धी चर्चा पर आधारित है ।

शत्रुघ्न की सामान्यतया अधिक चर्चा नहीं होती किन्तु वे परिवार व राज्य प्रशासन

को योग्य ढंग से संचालित करते हैं महल में रहते हुए भी तपस्वी हैं। सभी माताओं तथा तीनों वधुओं के बीच समन्वय, इतने बड़े कष्ट में संयम | महल व नंदीग्राम के बीच समन्वय नित्य पादुका पूजन आदि सभी कार्य नेपथ्य में रहकर शान्तता से पूर्ण करना, भरत की छाया बने रहना, यह सरल दिखने वाला कठिन कार्य शत्रुघ्न ने 14वर्ष पूर्ण किया। तीनों भाई सन्यासी वेश में और स्वयं को राजसी वेश में रखकर कितना बड़ा मन बनाया होगा यह निश्चित विचारणीय है। राम के अभिषेक के बाद उन्हें मथुरा का राज्य मिला, वह फिर वहीं के हो गए। सीता माता का तप तो श्रेष्ठ है ही | गांधी जी कन्याओं के एक कार्यक्रम में कहते हैं कि राम यदि हैं, तो सीता के सतीत्व

के कारण है, स्वयं बाल्मिकी कहते हैं कि रामायण वास्तव में सीता के तप की ही गाथा है, **सीता यश्चरितं महत् |**

सीता राम को कहती हैं मै ब्रह्मचारिणी रहकर वन को पितृगृह ही मानूँगी । यह वही सीता हैं जिसे कभी किसी नभचर ने भी नहीं देखा वह आज वनवास के समय अयोध्या की सड़कों पर तथा वन में पैदल चलती है। वनवास में भी जो अवधि उन्होंने काटी वह भी उनके तप की अनुपम गाथा है | सभी प्रकार के भय, प्रलोभन आदि में स्वयं को मन से स्वस्थ रखना | वे राक्षसियों को कहती हैं कि राक्षस राज को हाथ से तो क्या में अपने बाएँ पाव के अंगूठे से भी स्पर्श नहीं करूँगी । युद्ध की समाप्ति पर विभीषण की आज्ञा से राम हनुमान द्वारा सीता माता को बुलवाते हैं तो राम कहते हैं। हे सीता ! यह युद्ध तुम्हारे लिए नहीं अपितु इक्ष्वाकु वंश पर लगे कलंक के परिमार्जन हेतु, धर्म की रक्षा तथा लोक रक्षा के लिए लड़ा गया है, अब तुम जहाँ जाना चाहो जाओ। माता सीता श्री राम को अनेक प्रकार से अपने दिव्य जन्मा व शुद्ध होने के बारे में स्मरण कराती हैं तथा समस्त वानर, ऋक्ष, राक्षस समूह के सामने अग्नि परीक्षा भी देती हैं, स्वयं अग्नि देव उन्हें अपनी गोदी में लेकर प्रकट होते हैं और उनके शुद्ध होने की साक्षी देते हैं, राम कहते हैं, लोक अपवाद से मुक्ति हेतु यह उपक्रम था, मुझे भी सीता के शुद्ध होने का पूर्ण विश्वास था ।

श्री राम जब लोक रंजन हेतु माता सीता का त्याग करते हैं तो भी गर्भवती माता सीता कहती हैं **हे राम! तुम ही मेरी परमगति हो- त्वं हि मे परमागति |**

वे कहती हैं लोक आराधना हेतु में राघव द्वारा दिए इस कष्ट को भी सहूँगी | रघुवंश की आन मेरे लिए सर्वोपरि है ।

भगवान बाल्मिकी माता को कहते हैं कि हे सीता! मैं तुम्हारा धर्म पिता हूँ और राजा सभी का पिता होता है - **पिता ही सर्वभूतानाम राजा भवतिधर्मतः** (7.93.15) बा.रा. । सीता माता अपने पुत्रों को योग्य शिक्षा व संस्कार देती हैं, उन्हें पिता के प्रति श्रद्धावान बनाती हैं | भगिनी निवेदिता उन्हे भारत की महारानी कहती हैं ।

उर्मिला, मांडवी व श्रुतकिर्ती की तपस्या भी सभी भाईयों से कम नहीं है। राम राज्य की नींब की महत्वपूर्ण शिला में इनका योगदान भी कम नहीं हैं। उर्मिला व माण्डवी पति वियोग सहती हैं वहीं श्रुतकिर्ती महल में भी तपस्विनी है।

तीनों माताओं का तप भी कम नहीं है। भरत से अनेक प्रकार से अपमानित होकर, पति बिछोह को सहकर कैकेयी ने कैसे 14 वर्ष बिताए होंगे यह तप की एक अलग

ही गाथा है। श्री राम से मिलने जाते समय भरद्वाज मुनि भरत को कहते हैं कि हे भरत! राम के वनवास से देवता, दानव और ऋषियों का भला ही होने वाला है |

देवतां दानवानां ऋषिणा भावितात्मानाम् हितमेव भविष्याद्धि राम व्राजनादिह

(2.92.31) बा. रा.

राम राज्य और त्याग - तप के साथ ही त्याग का भी महत्व है। राम राज्य की नींव का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व त्याग ही है। इक्ष्वाकु वंश परम्परा में प्रारंभ से ही इस मूल्य का महत्व है। तप के पीछे जो शक्ति खड़ी है वह त्याग में ही निहित है। श्री राम राज्य को सहज त्याग देते हैं, बाल्मिकी लिखते हैं- राम त्याग के साक्षात मूर्तिमंत स्वरूप हैं, उन्हें युवराज बनने में कोई दंभ नहीं और वन जाने में कोई कष्ट नहीं है।

तुलसी दास जी लिखते हैं, कि श्री राम माता कौशल्या को कहते हैं मुझे पिता ने कानन(वन) का राज्य दिया है, तब माता कौशल्या राम को कहती हैं **"तौ कानन सत अवध समाना "** |

माता सुमित्रा लक्ष्मण को कहती हैं " राम दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम॥ अर्थात राम दशरथ सम व सीता में मुझे देखना । लक्ष्मण भी अक्षरश: उसका पालन करते हैं, जब सुग्रीव द्वारा आभूषण पहचानने का विषय आता है तो वे (लक्ष्मण) कहते हैं मैं तो केवल पाजेब व बिछुया ही जानता हूँ ऊपर तो मैंने देखा ही नहीं है। **नाहं जानामि केयुरे नाही जानामि कुंडले | नूपुरे त्वभि जानामि नित्य पादाभि वंदनात् ॥(बा. रा.)**

भारतीय जीवन दर्शन इसमें छुपा हुआ त्याग व सद्मार्ग का भी इसमें बोध है जो बताता है. **मातृवत् परदारेषु.....|**

भरत तो साक्षात त्याग ही हैं वे चित्रकुट में समस्त सामग्री के साथ जाते हैं जिससे कि श्री राम का अभिषेक किया जा सके। रामराज्य में राज्य पाने की नहीं राज्य छोड़ने की होड़ है। राम माता-पिता की आज्ञा से सभी सुख-सुविधाओं को छोड़ते हैं। भरत भी समस्त सुख-सुविधाओं का त्याग करते हैं, राम राज्य में राजा, प्रजा, राज परिवार त्याग के मूर्तिमंत स्वरूप हैं, सभी। जटायु को प्राण त्याग में ही संतोष व सार्थकता प्रतीत हुई ।

राम राज्य और आज्ञापालन - राम राज्य की नींव में आज्ञापालन भी महत्वपूर्ण है। राम हों, लक्ष्मण हों, भरत हों, प्रजा हो या सीता माता । राजा दशरथ जन कल्याण हेतु गुरु की आज्ञा से राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र को सौंपते हैं। राम लक्ष्मण जनकपुर में गुरु विश्वामित्र की आज्ञा से ही भ्रमण करते हैं,श्री राम धनुष भंग करते हैं। विश्वामित्र की आज्ञा से ही पिता को मिलते हैं।

वन जाते समय माता कौशल्या श्रीराम को कहती हैं कुले महति सम्भूते धर्म धर्म- चारिणी कुल के अनुसार धर्म में रहकर धर्म का पालन करो, यही धर्म तेरी रक्षा करेगा।

गोस्वामी जी लिखते हैं-

सुनु जननी सोई सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।।

तनय मातु पितु तोष निहारा | दुर्लभ जननी सकल संसारा ।।

दशरथ जनक जी के यहाँ से विदा होते समय पहले वसिष्ठ को रथ पर वैठाते हैं फिर स्वयं चढ़ते हैं। तपस्वी राष्ट्र का मस्तिष्क व आदर्शों का मानदंड माना जाता है, उनका पूरा सम्मान होना चाहिए।

श्री राम के बारे में कहा गया है- प्रातः काल उठकर रघुनाथा | मातु पिता गुरू नावहिं माथा ॥

श्री राम भरत को कहते हैं कि "गुरु, माताओं व मंत्रियों की सीख से भूमि, प्रजा व शासन का पालन करो"। मुखिया मुख सो चाहिए खान-पान को एक । पालहिं पोषहिं सकल अंग तुलसी सहित विवेक ॥

राम राज्य व स्वअनुशासन- राम राज्य में सभी स्वधर्म पालन करते हैं, - चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति ॥... सब निर्दभ धर्मरत पुनी | नर अरु नारि चतुर सब गुणी ॥

निजधर्म सभी अनुकरिहिं । सभी अपने-अपने कर्तव्यों का योग्य पालन करते हैं।

राम राज्य में- ब्राह्मणा: क्षत्रिया वैश्या: शुद्रा लोभ विवर्जिताः ।

सर्वे लक्षण सम्पन्न : सर्वे धर्म परायणा ॥

स्व कर्मसु प्रवर्तन्ते तुष्टा: स्वैरेव कर्मभि: ।.....

अर्थात- चारों वर्ण लोभ से परे, सुलक्षण सम्पन्न, धर्म परायण हैं, अपने - 2 कर्म में प्रव्रत हैं, संतुष्ट हैं।

श्री राम स्वयं भी धर्म का पालन करते हैं। निषाद राज का आग्रह हो या किष्किंधा में सुग्रीव का अभिषेक या लंका में विभीषण का अभिषेक, श्रीराम नगर में प्रवेश नहीं करते, उन्हें किसी का भी दबाब नहीं था, किन्तु ये स्वअनुशासन था। राम राज्य भयमुक्त, स्वअनुशासित, अपने - अपने धर्म का आचरण करने वालों का है। राम राज्य में सभी का हृदय परिवर्तित था। श्रीराम वनवासियों को तैयार करते हुए कहते हैं- इन राक्षसों का आखेट करो, संघर्ष करो, आत्मविश्वास जगाओ, विजयी होओ।

शत्रु द्वारा भी राम की बढ़ाई - रावण अपने सभासदों को कहता है ये टकराव आर्य और राक्षस संस्कृति का है, ये ताटका वध से ही प्रारंभ हो गया है- जैसे जिन्ना ने कहा था, कि पाकिस्तान की नींब 711ईस्वी में पहले हिन्दू के मुसलमान बनने से ही पड़ गई थी। रावण कहता सीता आर्य संस्कृति की प्रतीक है, राम जीता तो राक्षस जाति समाप्त हो जाएगी | अतिकाय की मौत पर रावण कहता है राम स्वयं नारायण है **"तँ मन्ये राघवंवीरं नारायण मनामयम् ॥ (6.72.11)** मारीच लक्षमण को कहता है । **'रामो विग्रह जान धर्म: साधुः सत्य पराक्रमः ।**

राम स्वयं धर्म हैं, साधु व सत्य पराक्रमी हैं ।

विभिषण, मंदोदरी व शुकनाथ सभी राम की विशेषता बताते हैं। रावण के सचिव उसे भरमा रहे थे।

रावण को वैसे मंत्री मिले। जिन्होंने ठीक मार्ग की प्रेरणा ही नहीं होने दी |

राम के मंत्रियो की विशेषता है- स्वदेश से उत्पन्न,वेद्शास्त्रो के विद्वान्, शूरवीर, सफल, व्यवहार आचरण में कुलीन |

राम राज्य में सामाजिक समरसता- राम राज्य में सभी एक दूसरे से प्रेम करते हैं, एक दूसरे को आगे बढ़ते देखकर प्रसन्न होते हैं - सभी नर करहि परस्पर प्रीति ....

-नहि कोऊ दरिद्र का दुखीन दीना ।

-नहिं को अबुध न लक्षण हीना ॥

-सब उदार सब पर उपकारी ।

किसी भी समाज, परिवार या राष्ट्र की वृद्धि वहां सामान्य समाज के प्रति अपनत्व का भाव ही होता है। परस्पर एक दूसरे के प्रति सद्भाव बहुत महत्वपूर्ण है |

राम राज्य बैठे त्रैलोका हर्षित भय गए सब लोका ।

बयरू न कर काहू सन कोई, राम प्रताप विषमता खोई ॥

राम राज्य में संघर्ष नहीं है, भेदभाव रहित है | [हनुमान निषाद, केवट, शबरी सुग्रीव, विभीषण सभी के प्रति अपनत्व व एकरसता]

समरस समाज का मूल- **जे हरषहि पर सम्पत्ति देखी। दुःखी होहिं पर विपति विसेसी ॥**

शरणागत की रक्षा व मित्रता- जब सुग्रीव विभीषण के बारे में शंकित होकर कहते हैं कि ये रावण का भाई है, हमारा भेद लेने आया है, हमें सजग रहना चाहिए उसे बंदी बनाकर रखना चाहिएँ तब राम लक्ष्मण के माध्यम से अपनी शक्ति व विश्वास व्यक्त करते हुए कहते हैं **"जग महुँ सखा निसाचर जेते, लछिमनु हनई निमिष महुँ तेते"।** साथ ही पहले बताते हैं। **"शरणागत को जे तजहि निज अनहित अनुमानि | ते नर पांवर पापमय तिन्हीं बिलोकत हानि ॥ (तु.रा. सुंदरकांड 43)**

यही विभीषण रावण की मृत्यु का मुख्य कारण बना। श्री राम सुग्रीव को भी मित्र स्वीकार करते हैं। किष्किन्धा और लंका दोनों को मुक्त कराकर अयोध्या के अधीनस्थ न कर उन्हें स्वतन्त्र राज्य घोषित करते हैं। उनसे मित्रवत व्यवहार करते हैं। निषाद, केवट सभी से मित्रवत व भ्रातृवत प्रेम रखते हैं। जटायु को तो पितृवत मानकर उनका संस्कार भी करते हैं क्योंकि गोस्वामी जी गिद्धराज के बारे में कहते हैं-

मन महँ गिद्ध पर सुख माना । राम काज मम लागहु प्राणा ॥

निषाद को तो कहते हैं- तुम मेरे भरत जैसे भाई हो । [मित्र भाव कैसा? निज दुःख गिरीसम रज करि जाना | मित्र के दुःख रज मेरु समाना |]

राम को लेकर जनआकांक्षा व राम का संकल्प- राम का संकल्प है -वन में श्रीराम ऋषियों की हडडीयों के ढेर से दुःखित व कुपित होते हैं और प्रतिज्ञा दोहराते हैं- **"निसिचर हीन करहूँ मही**

भुज उठाए प्रण कीन्ह | ऋषि मुनि के आश्रम जाय-जाए सुख दीन्ह" । राम कहते हैं में ऋषि-मुनियों के आश्रम में जा-जा कर उन्हें अभय करूँगा|

श्री राम ऋषि विश्वामित्र को कहते हैं - ब्राह्मण व समूचे देश के हित के लिए मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा- **गो ब्राह्मण हितार्थाय देशस्य च हिताय च....|** श्री राम के जन्म से पूर्व ही उनके जन्म का हेतु निर्धारित कर दिया गया था जो जनाकांक्षा के रूप में ही था - **जब-जब होहिं धर्म के हानि । बाढहि असुर अधम अभिमानी ॥ करहि अनिति जाई नहीं बरनी। सीदहिं विप्र धेनु सुरधरनी ॥ तब-तब धरि प्रभु विविध सरीरा । हरहिं कृपानिधि- सज्जन पीड़ा ॥**

भारत के दक्षिण में अनेक आततायी राक्षस व अन्य जातियों ने कोहराम मचा रखा था, वे नरभक्षी, यज्ञ आदि विरोधी थे। आज भी जैसे भारत में नक्सली, आततायी इस्लामी व ईसाई शक्ति व अन्य उपद्रव कारी दिखते हैं | ऐसी ही स्थिति थी, रावण उन सबका रक्षक था, तब ऋषियों ने श्री राम जन्म की मंगल कामना प्रकट की | श्री राम को विश्वामित्र द्वारा ले जाना भी उसी योजना का हिस्सा था, जिससे राम प्रत्यक्ष देखें, तद्नुरूप अपने मार्ग को निश्चित करें। तभी भारद्वाज मुनि भरत को कहते हैं कि राम का वनवास सात्विक समाज शक्ति के भले में है। राम भी जब युद्ध करते हैं तो उनका मानस कैसा है, वे विभीषण को कहते हैं कि निसाचर(राक्षस) भी मार्ग भटके हुए आर्य ही हैं | अर्थात मारना ही नहीं तो मन भी परिवर्तित करना। वानरराज बाली उनके अभियान में बाधक हो सकते थे अतः उन्हें भी समाप्त किया।

विनम्रता व क्रोध- श्री राम धनुष भंग पर कुपित हुए परशुराम को विनम्रता व सात्विक क्रोध से अनुकूल बनाते हैं अपनी शक्ति का परिचय देते हैं और उनके अहंकार का शमन करते हैं, ऐसे ही सागर के तट पर सागर से मार्ग मांगने हेतु विनम्रता से तट पर बैठते हैं – "बैठे पुनि तट दर्प डसाहि"- अपने अहँकार से मुक्त होकर सागर से मार्ग की याचना करते हैं, किन्तु तीन दिनों तक भी वह मार्ग देने हेतु प्रकट नहीं होता तो कहते हैं- "विनय मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीते।

बोले राम सकोप तब भय बिनु होहिं न प्रीत ॥ (सुंदरकार्ड 57)

राम की शक्ति के बारे में मारिच रावण से कहता है " तुम हठ छोड़ दो, राम परम शक्ति-शाली है, उसे क्रोध ना दिलाओं, अन्यथा तुम्हारे मंत्री व तुम्हारा अहंकार समूची राक्षस जाति के अन्त का कारण बनेंगे | गोस्वामी जी रावण के मंत्रियों के बारे में इंगित करते हैं- सुंदर कांड- **"बैठेउ**

सभाँ खबरि असि पाई। सिंधु पार सेना सब आई॥ बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मष्ट करि रहहू॥ जितेहु सुरासुर तब श्रम नाही। नर बानर केहि लेखे माही" ।

सचिव वैद गुरू तीनि जौं प्रिय बोलही भय आस।

राज धर्म तन तीनि कर होहहिं बेगिही नास ||

अर्थात श्री राम साम, दाम, दंड भेद में पारंगत हैं किन्तु वे दंड और भेद का उपयोग नहीं करते ।

राम राज्य और समन्वय - राम राज्य में एक और महत्वपूर्ण विशेषता है वह है परस्पर समंवय | ऋग्वेद में कहा है

"ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं
सं वो मनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे
सञ्जानाना उपासते ||

अर्थात- चलना,बोलना व मन एक ही हों, तभी देवताओं के जैसे अभिष्ट प्राप्त होगा।

राम राज्य में विषमता, वैर, संघर्ष नहीं है समन्वय है। राम के व्यवहार में राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिक सभी शाक्तयों का समन्वय दिखता है। राम परशुराम जो क्षत्रिय संहारक है उनसे भी समन्वय स्थापित करते हैं। यहाँ ऋषि विश्वामित्र व ऋषि वशिष्ठ जो कभी विपरीत शक्तियाँ थीं किन्तु राष्ट्र - समाज के हित में उनका भी समन्वय दिखता है। राम के द्वारा क्षत्रिय-ब्राहमण, शैव-वैष्णव, मानव का वानर, ऋक्ष, निसाचर सभी से सुन्दर समन्वय दिखता है। यहाँ अपने को निर्गुण – सगुण का समन्वय भी दिखता है. राम शिव व शक्ति विग्रह के भी उपासक है वही अग्नि व सूर्य के भी उपासक है। श्री राम जीवन में कुटुंब वत्सलता से अधिक प्रजा वत्सलता ध्यान आती है | श्री राम के राज्य में ब्रह्म तेज व क्षात्र तेज का अनुपम समंवय व संतुलन ध्यान आता है |

रामराज्य और सर्वस्वीकृति- राजा के लिए बहुस्वीकृत नहीं सर्वस्वीकृति आवश्यक है | राम के जन्म के समय सारी प्रजा में खुशी की लहर दौड़ गई, राम के वनवास पर सारी प्रजा अपनी समूची सुध-बुध भूलकर श्री राम के साथ वन में रहने को उधत हो जाती है | मनुष्य तो क्या राम के वनवास से घोड़े भी अश्रुपात करते हैं, वे भी राम को छोड़ना नहीं चहाते हैं | श्री राम परकीय

संस्कृति के प्रभाव के प्रति भी सचेत हैं, कि कहीं अपनी संस्कृति पर उनका प्रभाव न हो इसलिये राज्याभिषेक के तुरन्त बाद बाहर से आये अतिथियों को वापिस भेजने की व्यवस्था करते हैं।

राम राज्य और शस्त्रधारी राम-श्री राम शास्त्रों के साथ - साथ शस्त्रों के संचालन में भी दक्ष हैं। ऋषि विश्वामित्र उन्हें अनेक अस्त्रों-शस्त्रों को देतें हैंतथा उनके संचालन की विधि का प्रशिक्षण भी देतें हैं।वे श्री राम को बला व अबला विद्या भी सिखाते हैं जिससे भूख, थकान व ज्वर नहीं होता।श्री राम इन्ही शस्त्रों के प्रयोग से सुबाहु को मारते हैं तथा मारीच को दूर फेंक देते हैं।

वनवास काल में ऋषि अगस्त्य भी श्री राम को अनेक दिव्यास्त्र भेंट करते हैं जिनसे रावण का वध सरल हो गया।

सीता माता श्री राम को कहती हैं कि वनवास के समय ये शस्त्र क्यों? तब राम कहते हैं ,ये ऋषियों की रक्षार्थ हैं।भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं शस्त्रधारियों में मैं राम हूँ(रामः शस्त्र भृतामहम- 10/31)।राम का धनुष भी लोकहितार्थ ही प्रयुक्त होता है, वह इतना सिद्ध है कि यदि उससे एक बार बाण चला तो लक्ष्य भेद कर ही वापिस आता है।

राम राज्य और नारी का सम्मान-बाली का वध करते हुए श्री राम कहते है **"अनुजवधु भगिनी सुत नारी।सुन सठ कन्या सम ये चारि।। इन्हहि कुदृष्टि बिलोकत जोहि। ताहि वधे कछु पाप ना होंहि।।**

श्री राम जब ऋषि विश्वामित्र के साथ जातें हैं, जनकपुर के उपवन से पुष्प तोड़ कर ला रहे होते हैं और सीता माता को देखकर मन विचलित होता है, इसका वृतान्त वे ऋषि को तथा अनुज लक्ष्मण को बताते हैं कि रघुवंश में आज तक ऐसा नहीं हुआ। विधाता क्या चाहते हैं। ताड़का वध पर और शूपर्णखा को कुरूप करने के प्रसंग पर वे कहते हैं कि पापिनी होने के कारण ऐसा करना पड़ रहा है।वे पत्थर हो गई अहिल्या का उद्धार करते हैं, सीता माता की अग्नि परीक्षा व उन्हें वनवास देने पर वे कहते हैं राजा को लोकापवाद से ऊपर होना चाहिए, यद्यपि सीता शुध्द व पवित्र है तो भी लोकरंजन हेतु ऐसा करना पड़ रहा है।माँ सीता भी इसे उसी रूप में स्वीकार करती हैं, श्री राम दूसरा विवाह न करके स्वर्ण की मूर्ति साथ रखकर अनुष्ठान संपन्न करते हैं।

रामराज्य और पर्यावरण-रामराज्य में राजा सहित समस्त प्रजा नियमित यज्ञ-अनुष्ठान संपन्न करती है इससे प्रकृति सदैव अनुकूल रहती है।वृक्षादि सदैव फल व फूलों से लदे रहते हैं। धरती सदैव हरी-भरी रहती है, मानों त्रेतायुग में सतयुग आ गया हो।

राम राज्य और ईश्वरावतार राम-जब अतिकाय का वध हुआ तो रावण कहता है कि राघव स्वयं नारायण हैं | मारीच रावण को कहता है कि श्री राम धर्म की मूर्ति हैं।भरत राम को कहते हैं आप हर्ष और व्यथा से ऊपर हैं।कृतवास रामायण में लक्ष्मण सीता माता को कहते हैं"रामेर मुखे नाहि कातर वाणी" जब कोई महापुरुष अपनी समस्त अच्छाईयों व श्रेष्ठताओं तथा समस्त शील, चरित्र, सौंदर्य, शौर्य व पराक्रम के साथ अपने अनेक सद्गुणों और त्याग से समस्त मानवता का कल्याण साधन करता है तो मानों वह ईश्वर की शक्ति का अंश हो उठता है, उनका स्मरण हमे स्फुर्ति व सामर्थ्य प्रदान करता है।

शायर जाफर अली खाँ पाकिस्तानी कहते हैं-

नक्शे तहजीबे हुनूद अपनी नुमायाँ हैं,

अगर, तो वे सीता से हैं, लक्ष्मण से हैं, राम से हैं।

सागर निजामी ने कहा" मिट नहीं सकती कयामत तक हुकुमत राम की ||श्री राम और राम राज्य अलग-अलग नहीं हैं। श्री राम मानवीय चेतना के अभिन्न अंग हैं, वह मानवता की सांझी धरोहर हैं। श्रीराम के जन्म के समय प्रजा व प्रकृति द्वारा किए गए दिव्य स्वागत से ही राम राज्य की नींव पड़ गई थी।

गोस्वामी जी कहते हैं- राम अनंत अनन्त कथा विस्तार, सुनिआचरजु न मानिहहिं जिनके विमल विचार |

श्री राम रूपी मानसरोवर में स्नान करने से अनन्त लोगों को दैहिक, दैविक व भौतिक सुखों की प्राप्ति हुई है। सुल्तान के बुलाने पर गोस्वामी जी कहते हैं-

हम चाकर रघुवीर के, पटव लिखो दरबार | तुलसी अब क्या होहिंगे नर के मनसबदार | राम राज्य आत्म बोध द्वारा आत्मविश्वास,आत्मनिर्भरता व आत्मरक्षा का द्योतक है। राम राज्य लोक मंगल से विश्व मंगल का मार्ग है।

राम राज्य आज लाखों वर्ष बाद भी सुराज्य व स्वराज्य तथा राजा व प्रजा के सर्वोत्कृष्ट आदर्श व्यवहार का प्रतीक है। यहाँ मनुष्य- मनुष्य में समानता,

मानव की स्वतन्त्रता, बंधुता तथा समान न्यायिक प्रक्रिया का द्योतक है। राम राज्य सभी दृष्टि से प्रकृति व पर्यावरण से की दृष्टि से अनुकूल था। समर्थ रामदास ने इसे" आनंद वन भुवन" कहा है। मानवता का उतिउच्चदीप स्तंभ, पराकोटि का सुसंस्कृत समाज को ललामभूत श्री राम हैं, राम राज्य की उच्चता व धवलता हिमालय के समान है।

श्री राम का नाम जीवन विजय की ज्योति तथा आयु व आरोग्य बढ़ाने वाला रसायन है, समाज इसके उपयोग से मृत्युंजय होगा | ये कामधेनु, कल्पवृक्ष व अमृत तुल्य है। ये आज के समय में भी चिन्तनीय, मननीय व आचरणीय है |

पुस्तक संदर्भ

- राम चरित मानस- तुलसी नीति और राम राज्य –डा.सुभाष कश्यप (भारतीय विद्या भवन)
- बल्मिकीय रामकथा- सुरुचि प्राकशन
- रामायण एक विवेचनात्मक अध्ययन- डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री (प्रकर्ष प्रकाशन)
- पथदर्शिनी श्री रामकथा-वंदनीय मौसी जी केलकर (सेविका प्रकाशन नागपुर)
- रामगाथा रमानाथ त्रिपाठी (राजपाल प्रकाशन)
- श्री राम चरित मानस (गीता प्रेस गोरखपुर)